RNI No.: DEL/BIL/2004/14598

Youngster

YOUNGSTER • ESTABLISHED 2004 • NEW DELHI • AUG 2017 • PAGES 8 • PRICE 1/- • MONTHLY BILINGUAL (HIN./ENG.)

अकेलापन और अवसाद जल्द मौत के मुँह में ले जा रहा है.....

परिवार और दोस्तों के बिना जीवन कितना असहाय और कठिन हो जाता है इसकी बानगी दिल्ली के इंडियन एग्रीकल्चरल रिसर्च इंस्टिट्यूट, पूसा से रिटायर साइंटिस्ट यशवीर सूद की मौत से मिलती है। यशवीर सूद काफी पढ़े–लिखे थे और पूसा में ही न्यूक्लियर के प्रिंसिपल वैज्ञानिक थे लेकिन वे एकाकी जीवन जी रहे थे और दोस्तों, रिश्तेदारों से मिलना तो उन्होंने वर्षों पहले ही छोड़ दिया था। उनके पिता भी पूसा में ही थे और उन्होंने यहीं अपना जीवन बिताया था। पिता के रिटायर होने के बाद वही स्टाफ क्वाटर उन्होंने अपने नाम से अलॉट करा लिया था। बताया जाता है कि वह यहाँ अपनी बड़ी बहन और छोटे भाई को साथ रहते थे लेकिन एकाकी जीवन जीते–जीते सभी मानसिक रोगों का शिकार हो गये। भाई और बहन तो सशरीर सूद पर ही निर्भर थे। बताया जाता है कि रिटायरमेंट से पहले ही मानसिक रोग ने उन्हें भी घेर लिया था। शायद यही कारण है कि 2015 में रिटायर होने के बाद न उन्होंने कभी पेंशन ली और न ही कोई फंड निकाला था। मानसिक रोगी भाई–बहन के साथ एकाकी जीवन जीते–जीते उन्हें अहसास ही नहीं हुआ कि कब वह मानसिक रोग का शिकार हो गये। रूपया–पेंशन सब कुछ होने के बावजूद वह उसका उपयोग नहीं कर पा रहे थे और तीनों भाई–बहन एक छोटे से कमरे में दयनीय जीवन जी रहे थे। उनकी मौत 8–10 दिनों पहले हो चुकी थी लेकिन भाई–बहन उनके सड़े–गले शव के साथ रह रहे थे। आसपास के पड़ोसियों को जब घर से तेज बदबू आई तो उन्होंने पुलिस को फोन किया। तब जा कर पता चला कि उनकी मौत तकरीबन एक सप्ताह पहले हो चुकी है। इस घटना का जिक्र समाज में बढ़ रहे तनाव और एकाकीपन के लिए करना जरूरी है। जिंदगी की भाग दौड़ में आज आदमी को पास इतना भी समय नहीं कि वह अपने पड़ोसी या रिश्तेदारों का हाल भी जान सके। हमारे यहां मानसिक रोगियों की तादाद लगातार बढ़ती जा रही है लेकिन सामाजिक तानेबाने में लोग इसे मानसिक बीमारी न मानकर इसे व्यक्ति का व्यवहार मानकर किनारा कर लेते हैं और हाल ही में राजधानी दिल्ली, एनसीआर और मुम्बई में ऐसी कई घटनाएं सामने आई हैं, जिनसे पता चलता है कि मानसिक रोग और तनाव को लोग अनदेखा करते हैं जिसके परिणामस्वरूप ऐसी घटनाएं सामने आती हैं। राष्ट्रीय अपराध अनुसंधान संस्थान (एनसीआरबी) के आंकड़ों से पता चलता है कि एक साल में भारत में पैरालिसिस और मानसिक रोगों से प्रभावित 8409 लोगों ने आत्महत्याकी। सबसे ज्यादा आत्महत्याएं महाराष्ट्र में (1412) में हुईं। देश में वर्ष 2001 से 2015 केबीचके 15 सालों में कुल 126166 लोगों ने मानसिक–स्नायुरोगों से पीड़ित होकर आत्महत्या की है। पश्चिम बंगाल में 13932, मध्यप्रदेश में 7029, उत्तर प्रदेश में 2210, तमिलनाडु में 8437, महाराष्ट्र में 19601, कर्नाटक में 9554 आत्महत्याएं मानसिक तनाव को कारण हुईं हैं। भारत में 16.92 करोड़ लोग मानसिक, स्नायु विकारों और गंभीर नशे की गिरफ्त में हैं, जब कि जनगणना–2011 के मुताबिक मानसिक रोगों से केवल 22 लाख लोग प्रभावित हैं। यह आंकड़ा भ्रामक है क्यों कि यह केवल परिवार के मुखिया या सदस्य से पूछताछ के आधार पर तैयार किया गया है।परिवार का कोई भी सदस्य परिवार से बाहर किसी को यह बताना नहीं चाहता कि कोई मानसिक विकार है। 99 प्रतिशत मानसिक

Contd. Pg 2

Contd. Pg 1

परिवार का कोई भी सदस्य परिवार से बाहर किसी को यह बताना नहीं चाहता कि कोई मानसिक विकार है। 99 प्रतिशत मानसिक रोगी उपचार जरूरी नहीं मानते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार 2020 तक अवसादध्तनाव विश्व में दूसरा सबसे बड़ा रोग होगा।मानसिक रोगियों की इतनी बढ़ी हुई संख्या का उपचार विकासशील ही नहीं, विकसित देशों की क्षमताओं से भी परे होगा। विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा एकत्रित किए गए आंकड़ों के अनुसार, मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ी चुनौतियों और मानसिक रोगों की रोकथाम व इलाज के लिए उपलब्ध संसाधनों के बीच एक बड़ी खाई है। ऐसे में मानसिक रोगियों की बढ़ती संख्या भारत ही नहीं, विश्व भर में चिंता का बड़ा विषय है। लोकसभा में स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा दिए गए एक जवाब के मुताबिक मानसिक रोगों पर एक सर्वेक्षण किया गया है। यह सर्वेक्षण 1 जून 2015 से 5 अप्रैल 2016 तक चला और इसमें कुल 27,000 प्रतिभागी इसमें शामिल हुए। भारत में मानसिक मुद्दों का समाधान करने के लिए स्वास्थ्य पेशेवरों की भारी कमी महसूस की गई है। विशेष रूप से जिला और उपजिला स्तर पर इनकी संख्या बेहद कम है। दिसम्बर 2015 में स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा लोकसभा में दिए गए एक उत्तर के अनुसार, देश में कुल 3,800 साइकियाट्रिस्ट, 898 क्लिनिकलसाइकोलॉजिस्ट, 850 साइकियाट्रिक सोशलवर्कर और 1500 साइकियाट्रिक नर्स हैं। इसका मतलब यह है कि भारत में दस लाख नागरिकों के लिए केवल मनोचिकित्सक उपलब्धहै। विश्व स्वास्थ्य संगठन के आंकड़ों के मुताबिक यह संख्या राष्ट्र मंडल देशों के प्रति एक लाख की आबादी पर 5.6 मनोचिकित्सक से 18 गुना कम है। इस आंकड़े के हिसाब से भारत में 66,200 मनोचिकित्सकों की कमी है। इसी तरह वैश्विक औसत के आधार पर 100,000 लोगों पर मनोरोगियों की देखभाल के लिए 21.7 नर्सों की जरूरत के हिसाब से भारत को 269750 नर्सों की जरूरत है। राज्यसभा में 8 अगस्त 2016 को मानसिक स्वास्थ्य देखभाल विधेयक, 2013 ध्वनिमत से पारित किया गया था। नए विधेयक के मुताबिक अब केंद्र मानसिक स्वास्थ्य के क्षेत्र से जुड़े केंद्रों के लिए 30 करोड़ रुपये की बजाए प्रतिकेंद्र 33.70 करोड़ रुपये जारी करेगा।सबसे बड़ी बात यह है कि मानसिक रोगियों की देखभाल के लिए कानून को बना दिया गया है लेकिन इस कानून के तहत ज्यादातर सड़कों पर आवारा घूमने वाले मानसिक रोगियों तक ही विभागीय नजर रहतीहै। घरों में, परिवारों में और समाज में बढ़ रहे अवसाद को रोकने के लिए भूमि कोई ठोस उपाय नहीं किये जा रहे हैं और नही इस प्रकार की कोई व्यवस्था है कि हर सरकारी अस्पताल में मानसिक रोगियों के लिए एक विशेष वार्ड और ओपीडी हो तथा प्राथमिकता के आधार पर ऐसे रोगियों का निःशुल्क इलाज व दवा की व्यवस्था हो। हर व्यक्ति को एक निश्चित आयु होने पर मानसिक स्वास्थ्य परीक्षण अनिवार्य बनाने से इलाज में सहायता मिलेगी। अकेलापन व्यक्ति को मानसिक ही नहीं बल्कि शारीरिक रूप से भी बीमार बना सकता है। अकेलेपन की समस्या पूरी दुनिया में तेजी से बढ़ रही है। विशेष तौर पर बुजुर्गों में अकेलेपन की समस्या तेजी से बढ़ रही है। शिकागो युनिवर्सिटी के एक अध्ययन के अनुसार सामाजिक तौर पर सब से मिलने जुलने और साथ रहने वाले लोग अकेलेपन के शिकार लोगों की तुलना में 50 फीसदी तक अधिक जीते हैं। अकेलापन शरीर को ठीक उतना ही नुकसान पहुंचाता है जितना दिन में 15 सिगरेट पीने से शरीर को होता है। इस शोध में शोधकर्ताओं ने 3,08,849 लोगों पर 148 बार अध्ययन किया है। अकेलेपन से अवसाद, तनाव, व्याकुलता और आत्मविश्वास में कमी जैसी मानसिक समस्याएं होती हैं और साथ ही शारीरिक बीमारियां होने का जोखिम भी बढ़ जाता है। साल 2006 में स्तन कैंसर से पीड़ित 2800 महिलाओं पर हुए एक अध्ययन से पता चला है कि ऐसे रोगी जो कि तुलनात्मक रूप से परिवार या दोस्तों से कम मिलते थे, उनकी बीमारी से मौत की आशंका 5 गुना तक अधिक थी। शिकागो युनिवर्सिटी के मनोवैज्ञानिकों ने अपने एक शोध में पाया है कि सामाजिक रूप से अलग–थलग और भाग दौड़ वाली जीवन शैली जीने वाले लोगों की प्रतिरोधक क्षमता दिनों दिन घटती है। बड़ी संख्या में स्वस्थ लोगों में सुबह और शाम के वक्तकोलेस्ट्रोल की मात्रा की जाँच करने पर वैज्ञानिकों ने यह पाया कि अकेलेपन का शिकार लोगों को रोजमर्रा के काम निपटाने में भी तनाव होता है। अकेलेपन के शिकार लोगों की संख्या पूरी दुनिया में तेजी से बढ़ रही है। इनमें से अधिकांश लोग बुजुर्ग हैं। जिनके परिवार दूर चले गए हैं। अकेले होने काम तलब शारीरिक रूप से अकेले होना नहीं है बल्कि लोगों के साथ जुड़ाव महसूस ना होना या परवाह ना किया जाना भी एक अकेलापन है। सामाजिक तानेबाने के टूटने और एकाकी परिवारों के चलन और खानपान में आया बदलाव भी मानसिक बीमारी की एक बड़ी वजह है।

– करुणा, बीजेएमसी

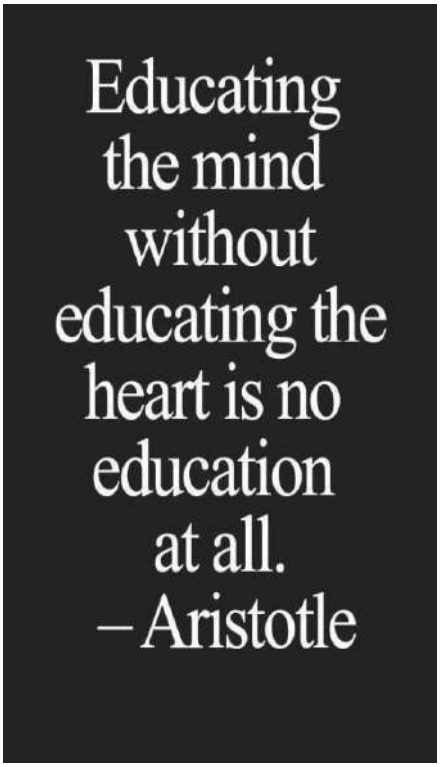

लड़कियां ही नहीं लड़के भी हो रहे शिकार

मानसिकता कितनी विकृत होती जा रही है इसका अंदाजा इसी से लग जाता है कि स्कूल के अंदर ही पांच साल की बच्ची से रेप हो जाता है। कथित रूप से स्कूल के अंदर ही सात साल के लड़के से यौन शोषण का प्रयास होता है और विरोध करने पर उसकी हत्या तक कर दी जाती है।अभी पिछले दिनों ही दिल्ली पुलिस ने एक ऐसे व्यक्ति को गिरफ्तार किया जो बच्चों को ही यौन शोषण का शिकार बनाता था।

करने होंगे उपाय

स्कूलों में सेक्स शिक्षा देने की मांग यदा–कदा उठती रहती है, इस पर अमल हो पाता है या नहीं या फि रकब होता है यह तो समय ही बतायेगा लेकिन फिलहाल इतना तो किया ही जा सकता है कि हम अपने बच्चों को इस बारे में जागरूक करें ता कि वह स्कूल में या बाहर इस बात का अंदाजा लगा सकें कि कौन उन्हें बुरी नजर से देख रहा है या गलत इरादे से छूने की कोशिश कर रहा है। यकीन जानिये यदि हम बच्चों को इस बारे में जागरूक करेंगे तो आगे उन्हें कभी भी किसी के शोषण का शिकार नहीं होना पड़ेगा। आइए नजर डालते हैं कुछ ऐसे ही उपायों पर अकसर हम टीवी देखते समय किसी प्रकार के अंतरंगश्य आने पर या फिर यौन शोषण के श्य आने पर टीवी बंद कर देते हैं या फिर बच्चों को इधर उधर भेज देते हैं। ऐसा करने की बजाय हमें उन्हें वह देखने देना चाहिए क्योंकि इससे उन्हें यह बात आसानी से समझ आतीहै कि गुड टच और बैड टच में क्या अंतर होता है। यदि यौन शोषण से जुड़े किसी केसी को टीवी पर दिखाया जा रहा है तो उसे भी बच्चे को देखने दे सकते हैं ताकि बच्चा यह समझ सके कि ऐसी परिस्थिति में खुद को कैसे बचाना है या कैसे मदद हासिल करनी है। अपने बच्चे के दोस्त बन कर रहें। यदि आप उन्हें डांटते फटकारते ही रहेंगे तो वह कभी आपको अपनी बातें शेयर नहीं करेंगे। बच्चों से स्कूल के सहपाठियों, टीचर या स्टाफ आदि के बारे में जानकारी लेते रहें। क्लास के अलावा स्कूल में वह किन–किन एक्टिविटी में भाग लेता है और किस–किस टीचर से उसका वास्ता होता है यह सब जानकारी भी रखें। अक्सर स्कूल कार्य दिवसों के समय में अभिभावकों को स्कूल परिसर के अंदर नहीं आने देते हैं इसलिए अगली बार जब भी पीटीएम में जाएं तो स्कूल के प्रवेश द्वार से लेकर बच्चे की कक्षा तक के रास्तों का खुद मुआयना करें और देखें कि सभी जगह सुरक्षित हैं या नहीं। बच्चों के टॉयलेट का भी हाल देखें और वहां से कोई बाहरी रास्ता हो तो इसबारे में स्कूल में अपनी आपत्ति दर्ज करायें।

आप स्कूल बस में आने वाले ड्राइवरों और कंडक्टरों की पहचान सत्यापित कराई गई है या नहीं इस बारे में स्कूल से जानकारी ले सकते हैं। स्कूल परिसर में सीसीटीवी कैमरा हैं या नहीं और उसकी रिकॉर्डिंग हो रही है या नहीं इस बारे में भी स्कूल से जानकारी हासिल कर सकते हैं। अगर आपका बच्चा प्ले स्कूल में है या नर्सरी में है तो यह देख लें कि स्कूल में उनके लिए अलग से वॉशरूम है या नहीं। बच्चे को अकेले बैठाकर बातें समझाने से अच्छा है कि काम करते करते समय समय पर उसे सीख देते रहें जैसे उसे नहलाते समय यह बता सकते हैं कि प्राइवेट पार्ट को किसी को नहीं छूने देते हैं या नही किसी को दिखाते हैं। अकसर लोग छोटे बच्चे को लेकर गोदी में बिठा लेते हैं और उसे चूमने लग जाते हैं। अपने बच्चे के अंदर शुरू से ही इस बात का विरोध करने की बात डालें क्योंकि कि सके मन में क्या चल रहा है यह आसानी से पता नहीं लगाया जा सकता। किसी शादी या पार्टी में जाएं तो खुद दोस्तों के बीच पूरी तरह व्यस्त न हो जाएं। बच्चों का ध्यान रखें क्योंकि सिर्फ सूनसान ही नहीं भीड़भाड़ वाली जगहों पर भी अकसर शोषण होने की घटनाएं सामने आती हैं। कभी कहीं बाहर जाना हो और बच्चों को घर पर छोड़ना हो तो किसी महिला को भी घर पर छोड़कर जाएं और बीच–बीच में बच्चों से बातें करते रहें। बच्चे को विपरीत परिस्थिति में अपने को बचाने और मदद हासिल करने के तरीकों के बारे में बताते रहना चाहिए। पता नहीं आपके द्वारा दिया गया कौन–सा टिप कब उसके काम आ जाये।

– कविता, बीजेएमसी

"Education is the most powerful weapon which you can use to change the world."
- Nelson Mandela

दुष्प्रचार से नहीं घबराने वाले और धुन के पक्के नेता हैं मोदी

नरेंद्र मोदी ऐसी शख्सियत का नाम है जो कभी भी आलोचनाओं से घबराता नहीं है। बल्कि अपनी आलोचनाओं का आत्म मूल्यांकन कर अपनी कमियों को सुधारने की कोशिश करता है। यही खूबी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को दूसरे राजनीतिज्ञों से अलग बनाती है। अगर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की लोकप्रियता की बात की जाए तो आज के समय में भारत में सबसे ज्यादा लोकप्रिय हस्ती कोई है तो उसका नाम नरेंद्र मोदी है। भारत में ही नहीं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की लोक प्रियता बड़े पैमाने पर है। मोदी देश–विदेश में कहीं भी जाते हैं तो लोग उनसे हाथ मिलाने, साथ में फोटो खिंचवाने और सेल्फी लेने को आतुर होते हैं। ऐसी लोकप्रियता आजके समय में विश्व के किसी भी राजनेता की नहीं दिखती है। एक समय ऐसा था जब नरेंद्र मोदी गुजरात के मुख्यमंत्री थे तब अमेरिका जैसे बड़े देश ने मोदी पर अमेरिका में आने पर प्रतिबन्ध लगा रखा था, लेकिन आज वही अमेरिका और उसके राष्ट्रपति चाहे पहले बराक ओबामा रहे हों, चाहें मौजूदा राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प हों मोदी का बाहें खोलकर स्वागत करते हैं। यह सिर्फ और सिर्फ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के हिमालय जैसे विराट व्यक्तित्व की वजह से है।

अगर नरेंद्र मोदी की राजनीति के बारे में बात की जाए तो आजादी के बाद भारत के इतिहास में जिस राजनेता ने विपक्ष की सर्वाधिक आलोचनाओं का सामना किया है तो पहले नंबर पर नरेंद्र मोदी का नाम होगा। विपक्ष नरेंद्र मोदी की जितनी भी आलोचना करता रहा हो, लेकिन हर बार नरेंद्र मोदी पूरी मजबूती के साथ एक सशक्त नेता के रूप में उभर के आये। क्यों कि नरेंद्र मोदी अपने खिलाफ किये गए दुष्प्रचार से कभी घबराये नहीं बल्कि उन्होंने अपनी आलोचनाओं और अपने खिलाफ विपक्ष द्वारा किये गए दुष्प्रचार का डटकर सामना किया। तभी नरेंद्र मोदी देश के प्रधानमंत्री जैसे बड़े पद पर पहुँच पाए। गुजरात के मुख्यमंत्री रहते हुए विपक्ष नरेंद्र मोदी की आलोचनाएं और दुष्प्रचार करता रहा और नरेंद्र मोदी सम्पूर्ण देश के आम जनके दिलों में अपनी जगह बनाते रहे, इसका नतीजा 2013 में नरेंद्र मोदी को भाजपा द्वारा प्रधानमंत्री पद का उम्मीदवार बनाना रहा। नरेंद्र मोदी को 2013 में प्रधानमंत्री पद का उम्मीदवार बनाने पर अधिकतर भाजपा के बड़े नेता सहमत नहीं थे, लेकिन देश में नरेंद्र मोदी की लोकप्रियता काफी बढ़ चुकी थी। इसके बाद देश के इतिहास में पहली बार ऐसा हुआ कि जिसमें किसी व्यक्ति को प्रधानमंत्री बनाने का फैसला पार्टी ने नहीं किया बल्कि जनता ने पार्टी को मजबूर कर दिया ऐसा करने के लिए, यह सिर्फ और सिर्फ नरेंद्र मोदी की भारत के जनमानस में लोकप्रियता के कारण ही हुआ।

नरेंद्र मोदी ने 13 साल गुजरात के मुख्यमंत्री रहते हुए अनेकों कार्य किये, जिसकी बदौलत गुजरात के साथ–साथ देशभर की जनता में भी नरेंद्र मोदी के लिए आकर्षण बढ़ा। मुख्यमन्त्री के रूप में नरेन्द्र मोदी ने गुजरात के विकास के लिये अनेकों महत्वपूर्ण योजनाएँ प्रारम्भ कीं व उन्हें सफलतापूर्वक क्रियान्वित कराया, जिससे उनके सुशासन और गुजरात के विकास मानक का डंका देश के साथ ही विश्व भर में भी खूब बजा। नरेंद्र मोदी ने 2002 के गुजरात दंगों के बाद जब अपने अच्छे काम से विकासपुरुष की छवि बनायी तब जिन देशों ने नरेंद्र मोदी के आने पर प्रतिबन्ध लगा रखा था उन देशों के सांसदों और राजनयिकों ने गुजरात में आना शुरू किया और नरेंद्र मोदी की तारीफों के खूब कसीदे पढ़े। इसने नरेंद्र मोदी के प्रति विश्वबिरादरी का रुख सकारात्मक करने में अहम भूमिका निभाई। यह सिर्फ और सिर्फ नरेंद्र मोदी द्वारा गुजरात में विकास के कार्यों और सुशासन स्थापित करने के कारण ही संभव हुआ।

नरेंद्र मोदी द्वारा गुजरात में किये गए विकास कार्यों और सुशासन की बदौलत ही आज वह देश के प्रधानमंत्री पद पर काबिज हैं। मोदी ने गुजरात में मुख्यमंत्री रहते हुए अनेकों ऐसी योजनाओं को सफलतापूर्वक क्रियान्वित किया जिनने गुजरात की छवि को बदल कर रख दिया। इन योजनाओं में प्रमुख रूप से पंचामृत योजना, सुजलाम्सुफलाम, कृषि महोत्सव चिरंजीवी योजना, मातृ– वन्दना, बेटी बचाओ, ज्योतिग्राम योजना, कर्मयोगी अभियान, कन्या कलावाणी योजना, बाल भोग योजना थीं। पंचामृत योजना राज्य के एकीकृत विकास की पंचायामी योजना थी। सुजलाम्सुफलाम के अंतर्गत गुजरात में जल की बर्बादी को रोकने के लिए जल स्रोतों का उचित व समेकित उपयोग किया गया। कृषि महोत्सव द्वारा उपजाऊ भूमि के लिये गुजरात में शोध प्रयोग शालाएँ खुलवाई गयीं। चिरंजीवी योजना के अंतर्गत नवजात शिशु की मृत्युदर में कमी लाने पर काम किया गया। मातृ–वन्दना योजना के द्वारा जच्चा–बच्चा के स्वास्थ्य की रक्षा हेतु गुजरात सरकार समर्पित रही। कन्याभ्रूण–हत्या व लिंगानुपात पर अंकुश हेतु "बेटी बचाओ" को गुजरात में लागू किया। ज्योतिग्राम योजना के द्वारा गुजरात के प्रत्येक गाँव में बिजली पहुंचाई

Contd. Pg 5

Contd. Pg 4

गयी। सरकारी कर्मचारियों में अपने कर्त्तव्य के प्रति निष्ठा जगाने हेतु कर्मयोगी अभियान नरेंद्र मोदी के गुजरात में मुख्यमंत्री रहते चलाया गया, जिसके सकारात्मक परिणाम निकले। कन्या कलावाणी योजना द्वारा सम्पूर्ण गुजरात में महिला साक्षरता व शिक्षा के प्रति जागरूकता पैदा की गयी। निर्धन छात्रों को विद्यालय में दोपहर का भोजन खिलाने के लिए बाल भोग योजना को सफलता पूर्वक क्रियान्वित किया। इन सभी योजनाओं के साथ ही नरेंद्र मोदी ने गुजरात के मुख्यमंत्री रहते हुए गुजरात के पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए कुछ दिन तो गुजारो गुजरात में'' का सदी के महानायक अमिताभ बच्चन से प्रचार करवाया। इस अभियान से गुजरात के पर्यटन को काफी लाभ हुआ। ये सिर्फ और सिर्फ नरेंद्र मोदी की दूरदृष्टि का ही कमाल है जिसकी वजह से देश का हर राज्य गुजरात की तरह विकसित राज्य बनना चाहता है।

नरेंद्र मोदी ने देश का प्रधानमंत्री बनने के बाद सम्पूर्ण भारत देश का विश्व स्तर पर मान बढ़ाया है। नरेंद्र मोदी का मन्त्र है '''न किसी को आंख दिखाएंगे, न आंख झुकाएंगे'' इसी मन्त्र के साथ मोदी के नेतृत्व में भारत का अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अहम स्थान बना है। आज पाकिस्तान जैसे देश जहा आतंकवाद का पोषण किया जाता है, को विश्व स्तर पर अलग–थलग करने में नरेंद्र मोदी की कूटनीति का ही अहम योगदान है। यह मोदी की कूटनीति का ही कमाल है जिससे चीन जैसे बड़े देश को डोकलाम विवाद पर अपने पैर पीछे खींचने पड़े। एक समय डोकलाम विवाद को लेकर ऐसा लग रहा था कि भारत और चीन के बीच युद्ध होकर रहेगा। लेकिन चीन की तरफ से उकसाने वाले बयान आने के बावजूद भी नरेंद्र मोदी ने संयम से इस गतिरोध का हल निकाला। जिसका नतीजा ये रहा कि चीन को डोकलाम से अपनी सेना वापस बुलानी पड़ी। नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में पूरे विश्व में भारत की जय–जयकार हो रही है।

आज नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में विश्व स्तर में भारत की धूम मची है।हमारे प्रधानमंत्री आतकंवाद के खिलाफ भी पूरे विश्व को एक जुट कर रहे हैं, इसका नतीजा ये रहा कि चीन में हुए ब्रिक्स 2017 के सम्मलेन के घोषणापत्र में आतंकवाद के मुद्दे पर भारत को बहुत बड़ी सफलता मिली। ब्रिक्स 2017 सम्मेलन में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने प्रभावी ढंग से आतंकवाद का मुद्दा उठाया, बाकी देशों ने भी भारत का पुरजोर समर्थन किया। इसका नतीजा ये निकला कि ब्रिक्स के घोषणा पत्र में पाकिस्तान के लश्कर–ए–तैयबा और जैश–ए–मोहम्मद समेत तालिबान, अलकायदा जैसे आतंकी संगठनों का जिक्र हुआ। यह भारत के लिए बहुत बड़ी कामयाबी थी। इसके अलावा जब से नरेंद्र मोदी भारत के प्रधानमंत्री बने है तब से देश प्रगति के रास्ते पर जा रहा है। नरेंद्र मोदी ने प्रधानमंत्री रहते हुए अब तक दर्जनों जनमानस से जुड़ी हुई योजनाओं को लागू कराया है, जिसका सीधा–सीधा लाभ आम जनता हो रहा है। पहली बार हमारी बहादुर सेना के नेतृत्व में पाकिस्तान में घुसकर लक्षित हमले किये गये और पाकिस्तान को सख्त सन्देश दिया गया कि हिन्दुस्तान अब पाकिस्तान पोषित आतंकवाद को बिल्कुल बर्दाश्त नहीं करेगा। कश्मीर में भी अब तक भारतीय सेना द्वारा दर्जनों बड़े आतंकवादियों को मार गिराया है। कश्मीर में अलगाववादियों पर भी टेरर फंडिंग मामले में राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) ने शिकंजा कसा हुआ है। ये वे लोग हैं जो कश्मीर घाटी में विध्वंसक गतिविधियों के लिए पाकिस्तान से धन लेते रहे हैं।

नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत सरकार ने देश में कई बड़े आर्थिक सुधार किये हैं जिनमें प्रमुख रूप से नोटबंदी और देश में जीएसटी का लागू होना है। एक समय ऐसा लग रहा था कि नोट बंदी का देश में बड़े पैमाने पर विरोध होगा लेकिन विपक्ष के विरोध के बाबजूद देश की आमजनता ने नरेंद्र मोदी के नोटबंदी के फैंसले को खुशी–खुशी स्वीकार किया। साथ ही मोदी ने देश में 01 जुलाई 2017 से जीएसटी (वस्तु एवं सेवाकर) को लागू कराया। वस्तु एवं सेवाकर (जीएसटी) को देश में लागू करा पाना भी मोदी सरकार के लिए बहुत बड़ी चुनौती थी। लेकिन मोदी सरकार ने इस चुनौती का सामना करते हुये अंततः सफलता प्राप्त की।

– अंकिता, बीजेएमसी

Tobacco Smoking in India

Tobacco smoking is already a major health problem in India and one that will worsen unless we act. Smoking alone is estimated to cause nearly 10 lakh deaths a year in India. About 1/3rd of Indian men now smoke; the number of women who smoke is lower but the health risks are just as dangerous for both. 70% of deaths from tobacco use occur during middle age when people are still in the most productive part of their lives and not in the old age. Chewing tobacco products such as gutka is common in India. Chewing causes over half of the deaths from oral cancers and women are especially hard hit. More young people are now chewing and pre-cancerous conditions

such as mouth lesions are increasing among youth. Fact 1: Chewing is common among men and women all over. In India 31% men and 19% women chew tobacco products and the percentage of people chewing in Bihar is much higher with 69% men and 22% women addicted to tobacco products. Tobacco use by pregnant women leads to low birth weight babies,still births and birth defects. Fact 2: Chewing is more common among the poorest as per Global Adult Tobacco Survey India 2010.About 30% of poorest,25% of middle income group and only 15% of higher income group people chew tobacco products. Fact 3: Women who chew tobacco have especially high risks of dying from oral cancer.3.8% of women in the age group 30-69 years face relative risk of dying from chewing than 1.5% of men. The relative risk of dying from oral cancer is greater among women but men have higher background death rates so the absolute risks are more equal. In Kishanganj 1,00,000

Contd. Pg 6

Contd. Pg 5

men in the age-group 15-69 years smoke of these 50,000 will be killed by smoking.70% will die during their productive years of 15-69 while 30% will die in the old age. More men about 59% smoke in Bihar in 2015 then previous years.612 lakh men who smoke cigarettes lose 10 years of life where as 687 lakh men who smoke bidis lose 6 years of life. The usage of tobacco is not just costing lives but it is imposing economic burdens on our country's health care systems that force health facilities to spend a great share of their precious resources in treating largely preventable diseases. Tobacco use also costs individual families as the cost of treatment for serious diseases like cancer or stroke can push families into poverty. Tobacco use pushes 28,000 people into poverty every year in Kishanganj.Tabacco costs the district Rs. 11 crore every year. Police have an important role in the implementation of tobacco control laws. Of 1000 policemen who smoke 350 will be killed by tobacco at ages 15-69 a staggering figure. Smoking cessation is the single most important action smokers can take to improve their health and lengthen their lives. But quit rates in India are very low at 5%. Quitting by age 40 and preferably earlier, avoids nearly all the risks. After quitting within 12 hours carbon dioxide levels decrease and oxygen levels increase. Within 3 months, heart attack risk drops and lung functions improve. Within 1 year, risk of sudden heart attack is cut in half and within 5 years risk of cancer of the mouth, throat, esophagus and bladder is halved. Section 4 of the Cigarettes and other Tobacco Products Act (COTPA) prohibits smoking in public places defined as any place to which the public have access whether as of right or not, but does not include any open space. Smoking is also prohibited at open spaces that are visited by the public like open auditoriums, stadiums, railway stations, bus stops and other such places. Individuals smoking in a public place are liable to pay a fine of up to Rs 200.

-Surbhi Jajodia, BJMC

वस्तु एवं सेवाकर (जीएसटी)

भारत की सबसे महत्वपूर्ण अप्रत्यक्ष कर सुधार योजना है। जिसका उद्देश्य राज्यों के बीच वित्तीय बाधाओं को दूरकर के एक समान बाजार को बांधक ररखना है। इसके माध्यम से सम्पूर्ण देश में वस्तुओं और सेवाओं पर एक समान कर लगाया जाएगा। इससे देश के सभी नागरिकों और व्यापारियों को सीधा–सीधा फायदा मिलेगा और कालाबाजारी तथा चोरी पर रोक लगाने में मदद मिलेगी। इसके साथ ही मोदी के नेतृत्व में प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना के द्वारा ढाई करोड़ से ज्यादा गरीब परिवारों को एलपीजी कनेक्शन मिल चुका है जो कि सरकार का बहुत बड़ा कदम है। इसके साथ ही जन–धन योजना के अंतर्गत 30 करोड़ से ज्यादा लोगों के जीरो बैलेंस पर खाते खुलवाए गए। मोदी सरकार कोयला, स्पेक्ट्रम और पर्यावरण के मामलों में पूर्ण पारदर्शिता लेकर आयी है। इसके अलावा केंद्र सरकार ने प्रधानमंत्री आवास योजना के जरिए 2022 तक भारत के प्रत्येक नागरिक को एक छत देने का संकल्प लिया है, इसमें हर साल के हिसाब से लक्ष्य तय किये गए हैं। इसके अलावा हार्ट स्टैंट की कीमतों में 80 प्रतिशत की कटौती की है।

मोदी सरकार ने नौकरियों में रिश्वतखोरी को रोकने की लिए ग्रेड 3 और 4 की नौकरियों में इंटरव्यू को पूर्णतः खत्म कर दिया है। स्वच्छ भारत के लिए भी प्रधानमंत्री ने खुद रूचि दिखाई है और स्वच्छ भारत अभियान को एक जन–आंदोलन बना दिया है। इसके अलावा प्रधान मंत्री मुद्रा योजना के अंतर्गत गरीबों के लिए ऋण की व्यवस्था सरकार ने की है, जिसका कुल बजट 3.15 लाख करोड़ रुपये है। मोदी सरकार ने नारियों के सशक्तिकरण के लिए भी कई घोषणाएं की हैं, जिसमें उज्ज्वला योजना, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ प्रमुख रू‍प से शामिल हैं। इसके अलावा भी सरकार ने महिलाओं के लिए मातृत्व अवकाश 12 हफ्तों से बढ़ाकर 26 हफ्ते किया है। इसके साथ–साथ गर्भावस्था में महिलाओं के पोषण के लिए 6000 रूपये की व्यवस्थाकी है।मुद्रा योजना में अब तक लिए गए लोन में 70 प्रतिशत महिलाएं लाभार्थी हैं। युवाओं के लिए भी सरकार स्किल इंडिया योजना के माध्यम से अवसर दे रही है, इसके माध्यम से 1 करोड़ युवाओं को प्रशिक्षण मिलेगा।इसके अलावा भी सरकार स्टार्टअप योजना के तहत भी युवाओं को मौके दे रही है। किसानों के लिए भी सरकार ने नीम–कोटेड यूरिया की व्यवस्था की है। नीम–कोटेड यूरिया इस्तेमाल के बाद जहां एक ओर यूरिया की कालाबाजारी कम हुई है, वहीं अब यूरिया के उपयोग पर गैर षिकार्यों में प्रतिबन्ध लगा है। इसके साथ की किसानों के लिए प्रधान मंत्री फसल बीमा योजना भी लागू की गयी है, इसके माध्यम से किसानों की फसल को प्राकृतिक आपदा की स्थिति में हुयी

Contd. Pg 7

Contd. Pg 6

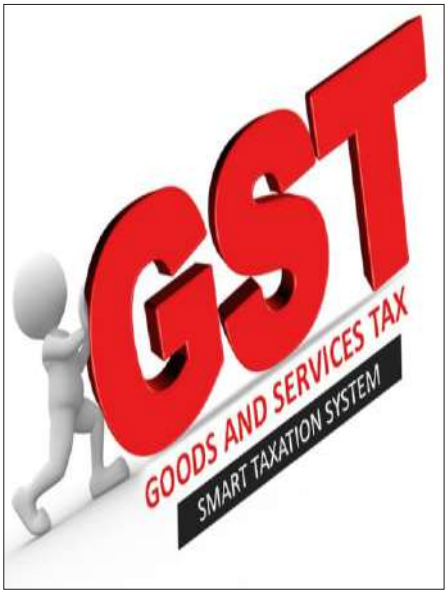

हानि को किसानों के प्रीमियम का भुगतान देकर एक सीमा तक कम करायेगी। इसके अलावा भी मोदी सरकार द्वारा देश में अनेकों जनहित की योजनाएं चलाई जा रही हैं, जिनका सीधा–सीधा फायदा आम आदमी को हो रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने तीन तलाक के खिलाफ मुस्लिम महिलाओं की आवाज बनकर इस मुददे को सार्वजनिक मंचों से उठाया, ऐसा देश में पहली बार हुआ कि किसी प्रधानमंत्री ने तीन तलाक के खिलाफ मुखर होकर आवाज उठाई हो। इसका नतीजा ये रहा कि उच्चतम न्यायालय ने 22 अगस्त 2017 को तीन तलाक मसले पर कई मुस्लिम महिलाओं की याचिकाओं पर सुनवाई करते हुये अपना ऐतहासिक फैसला सुनाया। अपने फैसले में देश की सर्वोच्च अदालत ने तीन तलाक की प्रथा को 'अमान्य', 'अवैध' और 'असंवैधानिक' करार दिया है। यह फैसला देश की लाखों–करोड़ों मुस्लिम महिलाओं के लिये जश्न का विषय था क्योंकि यह महिलाओं के समानता के अधिकार और संवैधानिक अधिकारों की जीत थी।

जब से नरेंद्र मोदी देश के प्रधानमंत्री बने हैं उनके नेतृत्व में देश ने कई गुना तरक्की की है। साथ–साथ सरकार ने कई बड़े और प्रभावी कदम उठाये हैं जिनका सीधा–सीधा सरोकार गरीब आमआदमी से था। इसके साथ ही मोदी सरकार ने अपनी योजनाओं के माध्यम से देश के अंतिम आदमी तक पहुँचने का प्रयास किया है जो कि सराहनीय कदम है। नरेंद्र मोदी ऐसे व्यक्ति हैं जो हर चीज को रचनात्मक रूप से पेश करते हैं और आम व्यक्ति को इससे जोड़ते हैं और जन–आंदोलन बना देते हैं। ईश्वर ऐसी विलक्षण प्रतिभा हर किसी को नहीं देता है जो कि नरेंद्रमोदी के पास है। प्रधानमंत्री अपने व्यस्त समय से समय निकालकर अपनी जननी और माता हीराबेन के चरणों में शीश झुकाते हैं। आज नरेंद्र मोदी की देश के प्रतिसमर्पण और त्याग की भावना को देख कर देश का प्रत्येक नागरिक उनको अपने दिलों में बसाये हुए है। बेशक नरेंद्र मोदी ने गुजरात के छोटे से वडनगर ग्राम में जन्म लिया हो लेकिन आज वो भारत के प्रत्येक घर के सदस्य बन चुके हैं। नरेंद्र मोदी के चाय बेचने से लेकर देश के प्रधानमंत्री बनने तक का सफर बहुत ही कठिनाइयों और परिश्रम से भरा रहा है। हर व्यक्ति को नरेंद्र मोदी के व्यक्तिगत जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए।

– पूजा कालरा, बीजेएमसी

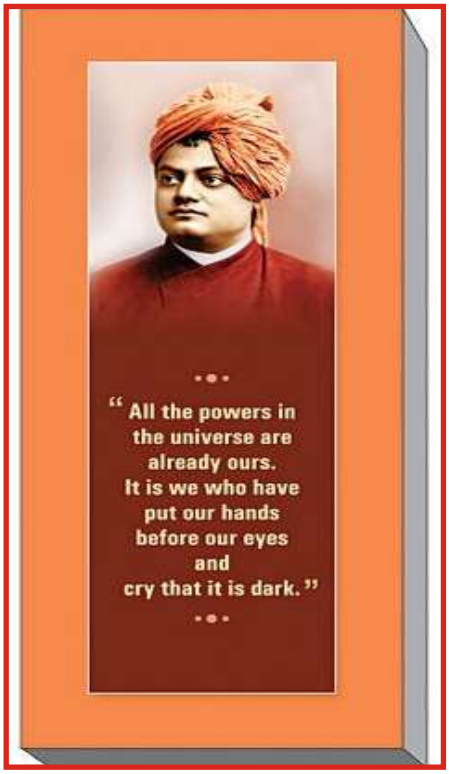

THIS MONTH

August 1, 1944 - Anne Frank penned her last entry into her diary. "[I] keep on trying to find a way of becoming what I would like to be, and what I could be, if...there weren't any other people living in the world." Three days later, Anne and her family were arrested and sent to Nazi concentration camps. Anne died at Bergen-Belsen concentration camp on March 15, 1945, at age 15.

•••

August 1, 1944 - The Warsaw Uprising began as the Polish Home Army, numbering about 40,000 Polish patriots, began shooting at German troops in the streets. The Nazis then sent eight divisions to battle the Poles, who had hoped for, but did not receive, assistance from the Allies. Two months later, the rebellion was quashed.

•••

August 6, 1945 - The first Atomic Bomb was dropped over the center of Hiroshima at 8:15 a.m., by the American B-29 bomber Enola Gay. The bomb detonated about 1,800 ft. above ground, killing over 105,000 persons and destroying the city. Another estimated 100,000 persons later died as a result ofradiation effects.

•••

August 8, 1945 - Soviet Russia declared war on Japan and sent troops into Japanese-held Manchuria.

•••

August 9, 1945 - The second Atomic bombing of Japan occurred as an American B-29 bomber headed for the city of Kokura, but because of poor visibility then chose a secondary target, Nagasaki. About noon, the bomb detonated killing an estimated 70,000 persons and destroying about half the city.

•••

Compilation: Honey Shah

BASICS OF MEDIA

Aspect ratio: The width-to-height proportions of the standard television screen and therefore of all analog television pictures: 4 units wide by 3 units high. For DTV and HDTV, the aspect ratio is 16 × 9.

•••

Character Generator(C.G.): A dedicated computer system that electronically produces a series of letters, numbers, and simple graphic images for video display. Any desktop computer can become a C.G. with the appropriate software.

•••

Color Compatibility: Color signals that can be perceived as black-and-white pictures on monochrome television sets. Generally used to mean that the color scheme has enough brightness contrast for monochrome reproduction with a good grayscale contrast.

•••

Essential Area: The section of the television picture, centered within the scanning area, that is seen by the home viewer, regardless of masking or slight misalignment of the receiver. Also called safe title area or safe area.

•••

Flat A piece of standing scenery used as a background or to simulate the walls of a room.

Compilation: Rahul Mittal

Tuberculosis in India: The Curse of the Increasing Inequality

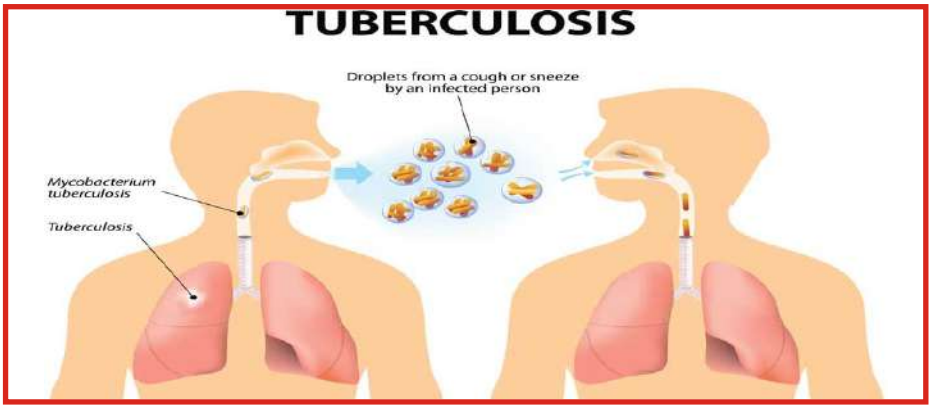

Tuberculosis, a contagious and airborne disease is a major public health problem in India. It has the highest number of TB cases in the world and accounts for the one fifth of the global TB burden in the world. Each year, more than 2 million people in India get TB. It also has the greatest number of new cases of MDR-TB, with an estimated 99,000 cases in 2014. Despite the fact that the total number of death by TB has fallen by 22% over last 5 years, over 300,000 people die from it annually (two in every three minutes). Case fatality ratio is 20% in India compared to 5% in developed country. The variation in the percentages suggests that there are critical socioeconomic determinants of TB that aggravate the situation and makes population in developing more vulnerable to TB. This essay aims to illustrate how social determinants of Tuberculosis such as low income, food insecurity, weak infrastructure and religion and culture make certain populations more vulnerable to Tuberculosis.

Food Insecurity and Malnutrition

Food insecurity is a significant factor that causes disadvantaged groups to be risk averse to Tuberculosis infection. Despite impressive economic growth, India has not been able to maneuver around the problem of food insecurity. According to the International Food Policy Research Institute, 21% of the whole population is malnourished, and 60 million children in India are underweight (Food Security Portal). Studies done in India showed discrepancy between economic levels; prevalence of TB was three times higher among low-income households than high-income households (Thomas, 2012). In low-income households, populations do not receive adequate nutrition because of food insecurity,h which results in malnourished people. immune system; as a result, they have higher chances of getting infected by the tuberculosis bacteria (Thomas, 2012). Additionally, weak immune system can also lead to secondary immunodeficiency that increases the TB patient's vulnerability to other infections. Lastly, weakened immune systems also leads to other health complications such as loss of appetite, altered metabolism, and mal-absorption of nutrients, which further increases the chances of getting infected by the TB bacteria (Thomas, 2012).

Religion and Culture

Religion and Culture are factors that strongly influence one's attitudes towards health and treatment methods. India being a country that values religious and traditional beliefs, has significant population that believe that diseases are the manifestation of god's wrath and are curable solely by prayer (Ghose, 2014). It is generally perceived that religious people have a strong sense of guilt and are opposed to taking medication because medication is perceived as an attack on their faith (Ghose, 2014). These beliefs although significant can deter population from receiving the required healthcare assistance. This can be illustrated by a research that was conducted by Babiarz in Bihar, India. This research set out to investigate the effectiveness of India's TB control programs; however, it was found that 24% of the patients discontinued their treatment 25 weeks prior to the treatment completion (Babiarz, 2011). Symptoms persisted in 42% of patients discontinuing treatment within 5 weeks and symptoms persisted in 28% after completing 25 weeks of treatment (Babiarz, 2011). The reason behind discontinuation of treatment was largely based around religious reasons; 84.2% of the patients who discontinued their treatment were religious (Hindu) versus 30.80% who were Hindus out of all the patients who completed their treatment (Babiarz, 2011). This clearly depicts the fact that religious and cultural beliefs play a significant role with regards to discontinuation of TB treatment in India. No treatment of discontinuation of treatment due to religious beliefs increases the risk of getting the TB infection because the untreated population is contagious and put lives of other who they interact with at risk.

-Chaitanya, BJMC

Vol. 13 **No.** 8
RNI No.: DEL/BIL/2004/14598
Publisher: Ram Kailsah Gupta on behalf of Tecnia Institute of Advanced Studies, 3 PSP, Madhuban Chowk, Rohini, Delhi-85; **Printer:** Ramesh Chander Dogra; **Printed at:** Dogra Printing Press, 17/69, Jhan Singh Nagar, Anand Parbat, New Delhi-5
Editor: Rahul Mittal, responsible for selection of News under PRB Act. All rights reserved.

IMPORTANT QUOTES

"Reality is merely an illusion, albeit a very persistent one."
Albert Einstein

•••

"A little inaccuracy sometimes saves a ton of explanation."
H. H. Munro

•••

"It is dangerous to be sincere unless you are also stupid."
George Bernard Shaw

•••

"In any contest between power and patience, bet on patience."
W.B. Prescott

•••

"Make everything as simple as possible, but not simpler."
Albert Einstein

•••

"Well-timed silence hath more eloquence than speech."
Martin Fraquhar Tupper

•••

Compilation: Rahul Mittal

WINNERS v/s LOOSERS Part-73

The Winner says, "Let me do it for you".The Loser says, "That is not my job."

•••

The Winner sees an answer for every problem;The Loser sees a problem for every answer

•••

The Winner says, " It may be difficult but it is possible".The Loser says, "It may be possible but i t is too difficult."

•••

When a Winner makes a mistake, he says, "I was wrong";When a Loser makes a mistake, he says, "It wasn't my fault."

•••

A Winner makes commitments;
A Loser makes promises.

•••

Winners have dreams;
Losers have schemes.

To Be Continued In Next Issue-

Compilation: Rahul Mittal

All Students and Faculty are welcome to give any Article, Feature & Write-up along with their Views & Feedback at: **hodbjmc@tecnia.in**